RNI No - RAJHIN/2003/9899 Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 May 2018 Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd May 2018

मासिक पत्रिका

अजायब ✵ बानी

वर्ष : सोलहवां | अंक : पहला | मई–2018

5 सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
शादी
(स्वामी जी महाराज की बानी)

13 परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
आपके जीवन श्वांसों का लुटेरा

19 सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
धर्म–कर्म
(गुरु नानकदेव जी की बानी)

31 (परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले)
भजन–अभ्यास

34 (दिल्ली में सतसंग के कार्यक्रम की जानकारी)
धन्य अजायब

संपादक–प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71 80 79 08 46 01 & 98 71 50 19 99
विशेष सलाहकार–गुरमेल सिंह नौरिया
96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक–नन्दनी, **सहयोग**–परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने पॉलीकम ऑफसैट, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। मूल्य : ₹5/–
e-mail : dhanajaibs@gmail.com 194 Website : www.ajaibbani.org

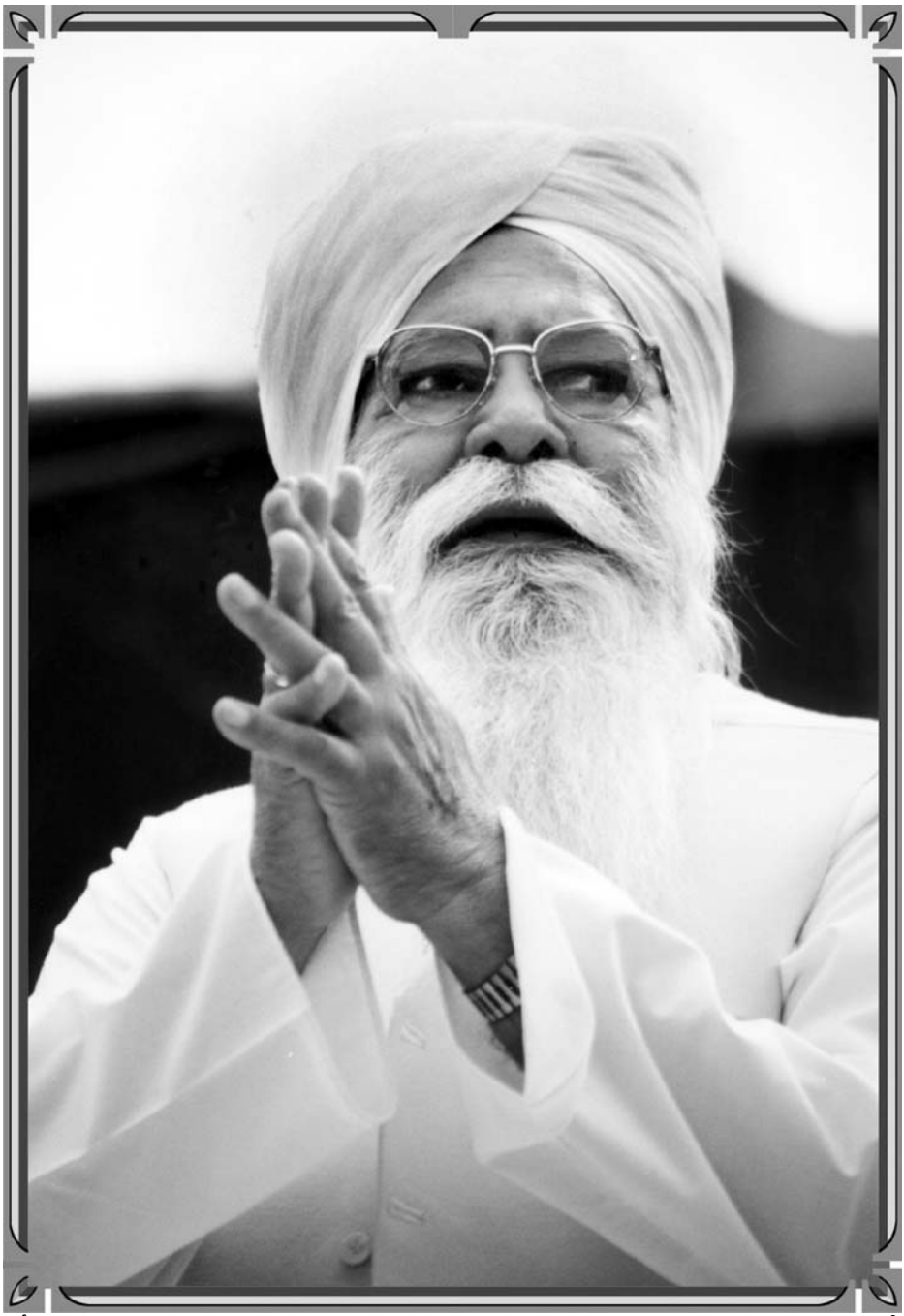

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

शादी

स्वामी जी महाराज की बानी DVD 525(3) 16 पी.एस. राजस्थान आश्रम

आत्मा परमात्मा की अंश है, प्यार अंशा-अंशी होता है। आत्मा का झुकाव परमात्मा की तरफ होता है। हमारी आत्मा को सदा ही इस चीज की खोज रही है कि मेरा पिता कौन है? परमात्मा कौन है? मेरा आदि और अंत क्या है? लेकिन मन आत्मा को गुमराह किए बैठा है। मन ने आत्मा को अपने घर वापिस पहुँचने का रास्ता भुला दिया है। हमारी आत्मा अपनी तबाही को देख रही है लेकिन बेबस है और यह गुलामों की तरह मन के आगे अपनी जिंदगी व्यतीत कर रही है।

काल भी उस दयाल की अंश है। आप कबीर साहब का अनुराग सागर* पढ़ते हैं कि परमात्मा अपने प्यारे बच्चे सन्त-महात्माओं को सदा ही संसार में भेजता रहता है। काल ने परमात्मा की बहुत सख्त तपस्या की और परमात्मा से आत्माएं मांग ली। परमात्मा ने कहा कि मैं प्यार में सेवा वश इसे वचन दे चुका हूँ, आप इसके साथ जाएं। यह नई जगह आबाद करना चाहता है, यह अपनी एक नई रचना रचाएगा जिसमें यह आपको काफी सहूलियतें देगा।

जब परमात्मा ने आत्माओं को अपने से अलग किया, काल के पास भेजा उस समय आत्माओं ने परमात्मा के आगे बड़ी ही नम्रता से प्रार्थना की, ''आप कहते हैं कि यह बाग-बगीचों का देश रचेगा लेकिन हम इसे नहीं जानती कि यह हमारे साथ क्या बर्ताव करेगा अगर यह हमें दुखी करेगा तो हम किसके आगे पुकार करेंगे, कौन हमारी पुकार सुनेगा?''

उस समय परमात्मा ने इन आत्माओं के साथ एक जबरदस्त वायदा किया, ''मैं सेवावश होकर तुम्हें काल को सौंप बैठा हूँ लेकिन मेरी अंश भी संसार में आएगी अगर यह तुम्हें तंग करे तो तुम उस अंश की आवाज को सुनकर मेरे पास आ सकती हो।''

कबीर साहब कहते हैं कि ये जीव काल का खाज हैं। जब काल जीवों को गर्म शिला पर रखकर खाने लगा तब आत्माएं रोई और उन्होंने परमात्मा के आगे प्रार्थना की कि तू हमारी रक्षा कर।

परमात्मा ने सबसे पहले संसार में कबीर साहब को भेजा। जो आत्माएं यहाँ के कष्ट को कष्ट समझकर पुकार करेंगी मैं उनके लिए अपनी अंश हमेशा ही भेजता रहूँगा लेकिन जो आत्माएं काल के बहकावे में आ जाएंगी उनके पास अगर कोई मेरी बात भी करेगा तो वे बहुत गुस्सा मनाएंगी, कहेंगी कि भगवान हो ही नहीं सकता; वे मेरी मौज को नहीं मानेंगे।

स्वामी जी महाराज ने उस वक्त का नक्शा खींचा है कि जो अंदर जाते हैं उनका यह कहना है कि जब पवित्र आत्मा शब्द के साथ विलास करती हैं तब शब्द-रूप गुरु सतपुरुष भी उन आत्माओं के साथ प्यार करता है और यह कहता है, ''मैंने तुझे गंदे देश से निकालकर रानी बना दिया है।'' आत्मा खुश होकर कहती है, ''तेरे ऊपर कैसे भरोसा करें कहीं तू फिर हमें काल को न सौंप दे!'' सतपुरुष इसे वहाँ भी दिलासा देता है कि एक बार मौज थी अब ऐसी मौज बिल्कुल नहीं उठेगी।

पश्चिम और हिन्दुस्तान की **शादी** में बहुत फर्क है। पश्चिम की शादियों का तो आपको पता ही है कि बच्चे खुद ही फैसला करते हैं जिसमें कुछ भी खर्च नहीं होता। मुझे कई शादियां देखने

का मौका मिला है। आपने यहाँ भी एल्विया और मार्क की **शादी** देखी है। यहाँ ऐसे कई प्रेमी बैठे हैं जो उस शादी में शामिल थे। इन्होंने खेत में से सरसों के बूटे के फूल तोड़ लिए और घास की दो टहनियां तोड़कर सिर में टांग ली, लो जी! लड़की का श्रृंगार हो गया। शादी में पैसा नहीं लगा। एक प्रेमी ने दो लफ्ज पढ़ दिए। हमारे बुजुर्गों ने जो विधि चलाई है लो जी **शादी** हो गई।

हिन्दुस्तान की **शादी** इसके बिल्कुल उल्ट है। माता-पिता ने सारी जिंदगी जो पैसा कमाया होता है वह एक ही शादी में लग जाता है, कईयों को तो कर्ज भी उठाना पड़ता है। हिन्दुस्तान में लड़की या लड़के को जो कुछ देते हैं रिश्तेदार उसे देखने जाते हैं कि क्या लिया और क्या दिया? **शादी** में लाखों रूपये लग जाते हैं।

जब **शादी** करते हैं तो लड़की वाले अपना सारा जोर दहेज बनाने में लगा देते हैं। लड़की वाले लड़की को अच्छी तरह श्रृंगारते हैं, लड़के वाले लड़के को खूब श्रृंगारते हैं अच्छे कपड़े पहनाते हैं। जब घर में लड़की की डोली आती है तो लड़के के परिवार वाले ज्यादा से ज्यादा खुशी मनाते हैं। घर में लड़के की बहुत तारीफ करते हैं कि लड़का बहुत अच्छा है बेशक बेचारा लड़का ठीक से बोल भी न सकता हो।

गुरु नानकदेव जी ने उस नक्शे को अपनी बानी में बहुत खूबसूरत तरीके के साथ पेश किया है कि जब आत्मा परमात्मा के दरवाजे पर जाकर खड़ी होती है जिस तरह यहाँ पर रिश्तेदार खुशियां मनाते हैं। लड़के की माँ लड़के-लड़की के सिर के ऊपर से पानी वारती है फिर उस पानी को पीती है। लड़के-लड़की के साथ ज्यादा से ज्यादा प्यार किया जाता है, मंगल गीत गाए जाते हैं। उसी तरह जो आत्मा मातलोक से भँवरगुफा पार करके सचखंड में

सतपुरुष के पास जाती है, वहाँ सचखंड पहुँची हुई आत्माएं उसे लेने के लिए आती हैं। वहाँ ज्यादा से ज्यादा खुशी मनाई जाती है। पहुँची हुई आत्माएं कहती हैं देखो बहनों!

हर जेहा अवर न दिस्सी कोई दूजा लवे न लाए।
मिल सईयां मंगल गावी ते गीत गोबिंद बुलाए।।

यह तेरा पिता परमात्मा है यही तुझे यहाँ लेकर आया है। वहाँ तुझे किसी ने क्या गले लगाना था? तू मातलोक में विषय-विकारों में लिपटी हुई थी। सचखंड पहुँची हुई सारी सखियां खुशियों के गीत गाती हैं।

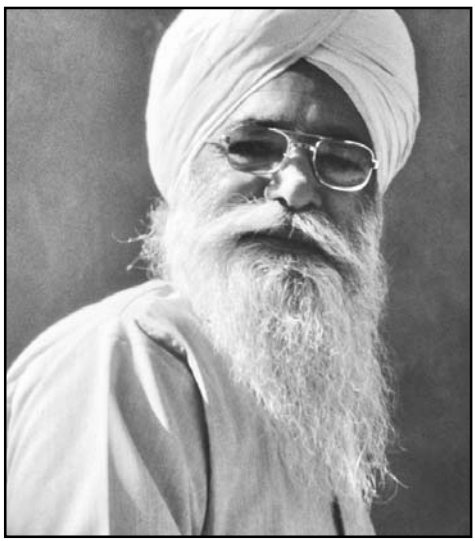

जिस तरह हिन्दुस्तान में जब लड़की घर में पैर रखती है तो खुशी के गीत गाए जाते हैं इसी तरह वहाँ बहुत धूमधाम होती है, जो आत्माएं जीते जी वहाँ पहुँचती हैं उन्हें पता है। अब हिन्दुस्तान में रिवाज बदल रहे हैं पहले न तो लड़का लड़की को देखता था न लड़की लड़के को ही देख सकती थी, बिचोलिए **शादी** तय करते थे। शादी में फेरों पर हमारे पैसे भाई या पंडित ले जाता है।

पश्चिम के बहुत प्रेमी मिलते है, वे ज्यादातर यह बताते हैं कि यह हमारी तीसरी **शादी** है कोई बताता है कि यह मेरी चौथी शादी है। मैं सुनकर हँसने लगता हूँ कि आपकी शादियां तो मुफ्त में ही

हो जाती हैं अगर हिन्दुस्तान की शादियों की तरह जिंदगी की सारी कमाई लगी हो तो शादी तोड़कर दिखाएं!

मेरा आपको इतना कुछ बताने का यही भाव था कि जिन आत्माओं के अंदर तड़प है जिन्हें प्यास लगी होती है वे बहुत इज्जत से पानी पीती हैं और पानी पिलाने वाले की भी इज्जत करती हैं। जिनके अंदर प्यास नहीं होती वे पानी की कद्र नहीं करती। इसी तरह जिस आत्मा के अंदर तड़प होती है जब उसे गुरु मिलता है, नाम मिलता है तो उसे जो करने के लिए कहा जाता है वह उसे बहुत ईमानदारी से करता है।

मालिक के प्यारे सन्तों ने ज्यादा से ज्यादा कुर्बानियां की। उन्होंने आत्मा की खातिर बहुत मेहनतें की, ग्रंथ लिखे सतसंग किए और बहुत लंबे-चौड़े सफर किए। सन्तों ने आत्माओं को संदेश दिया कि जिस परमात्मा को आप जन्म-जन्मांतर से बाहर खोज रहे हैं, जिसे प्राप्त किए बिना मुक्ति नहीं वह परमात्मा बाहर किसी जगह नहीं मिलेगा। परमात्मा न समुंद्र में मिले, न पहाड़ की चोटी से मिले न किसी खास स्वर्ण मंदिर या मस्जिद से मिले। परमात्मा जब भी मिलेगा आपको शरीर के अंदर से ही मिलेगा। आप अपने घट में चढ़ जाएं। घट दोनों आँखों के दरम्यान तीसरे तिल से थोड़ा सा ऊपर है। घट में पहुँचकर पता चलता है कि परमात्मा जन्म-जन्मांतर से हमारे अंदर ही बैठा है।

सन्त-महात्माओं का यह मकसद बिल्कुल नहीं होता कि आप नाम लेकर दस साल, पंद्रह साल, चालीस साल या पचास साल इंतजार करें कि हमारा पर्दा खुलेगा। सन्त कहते हैं, ''सोते हुए किसी का पर्दा नहीं खुलता। आप कुछ दिन नाम की कमाई करके देखें आप जरूर तरक्की कर जाएंगे।'' लेकिन हम कमाई के,

भजन के चोर हैं अगर हम भजन की चोरी करते हैं तो हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ये पाँचो डाकु घेर लेते हैं फिर हमारे अंदर भ्रम पैदा हो जाता है और हम सन्तों के ऊपर ही शक करने लग जाते हैं।

खोज री पिया को निज घट में,खोज री पिया को निज घट में।
जो तुम पिया से मिलना चाहो, तो भटको मत जग में।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''अगर आप अपने परमात्मा से मिलना चाहते हैं तो आप बाहर विषय-विकारों की भटकना को छोड़ दें। परमात्मा हमेशा ही आपकी इंतजार में है।''

तीर्थ व्रत कर्म अचारा ये अटकावें मग में।

आप कहते हैं, ''हम जिन कर्मों को करने में मुक्ति समझते हैं सन्तमत में उन कर्मों की कोई कीमत नहीं। पानी शरीर की मैल उतारता है, आत्मा की मैल नहीं उतारता। आत्मा की मैल नाम से उतरती है। व्रत का यही मतलब है कि आप संयम में खाना खाएं लेकिन हम कई-कई दिन भूखे रहते हैं अगर भूखे रहने से परमात्मा मिलता होता तो बच्चे साल दो साल तक खाना ही नहीं खाते या कभी हम बीमार हो जाते हैं तो हम दो-तीन महीने खाना नहीं खाते तो हमें परमात्मा मिल जाना चाहिए था।''

महात्मा कहते हैं कि लोग थोड़े दिन का व्रत रखते हैं लेकिन मालिक के आशिक जिंदगी भर का रोजा रखते हैं। वे कभी भी पेट भरकर खाना नहीं खाते। वे खाने के लिए नहीं जीते बल्कि शरीर को चलाने के लिए ही खाना खाते हैं।

जब लग सतगुरु मिले न पूरे पड़े रहोगे अग में।

पूरे गुरु के बिना नाम नहीं मिलता। नाम के बिना हमारा आने-जाने का चौरासी का चक्कर खत्म नहीं होता। हम जब तक नाम प्राप्त नहीं करते तब तक हमारा जन्म-मरण नहीं कट सकता।

नाम सुधा रस कभी न पाओ भ्रमों जोनि खग में।

इंसानी जामे की कद्र नहीं की, नाम प्राप्त नहीं किया, नाम नहीं जपा तो आपको पशु-पक्षियों के जामें में जाकर पैदा होना पड़ेगा।

पंडित काजी भेख शेख सब अटक रहे डग डग में।
इनके संग पिया नहीं मिलना पिया मिले कोई साध समग में।।

सारा संसार पंडितों, काजिओं और शेखों के पीछे लगा हुआ है। कोई परमात्मा को चर्च में कोई मंदिर में कोई मस्जिद में तो कोई किसी और जगह ढूंढ रहा है। ये पंडित, काजी और शेख तो कदम-कदम पर अटक रहे हैं, इन बेचारों का खुद ही अंदर से भ्रम नहीं निकला। आप जब तक किसी सच्चे साधु की शरण में नहीं जाते आपको परमात्मा नहीं मिलेगा।

कबीर साहब कहते हैं कि मेरा मन पक्षी की तरह उड़ा कि परमात्मा कहीं मिले! जब मैं आकाश में स्वर्गों में गया वहाँ परमात्मा बिल्कुल नहीं था। जब मैंने निगाह मारी तो परमात्मा सन्तों के साथ बैठा हुआ था; परमात्मा सन्तों के जरिए काम कर रहा था।

ये तो भूले बिखे बास में भ्रम धसे इनकी रग रग में।
बिना सन्त कोई भेद न पावे वे तोहे कहे अलग में।
जब लग सन्त मिले न तुमको खाए ठगोरी तुम इन ठग में।
राधास्वामी शरण गहो तो रलो जोत जगमग में।।

***

2 दिसम्बर 1986

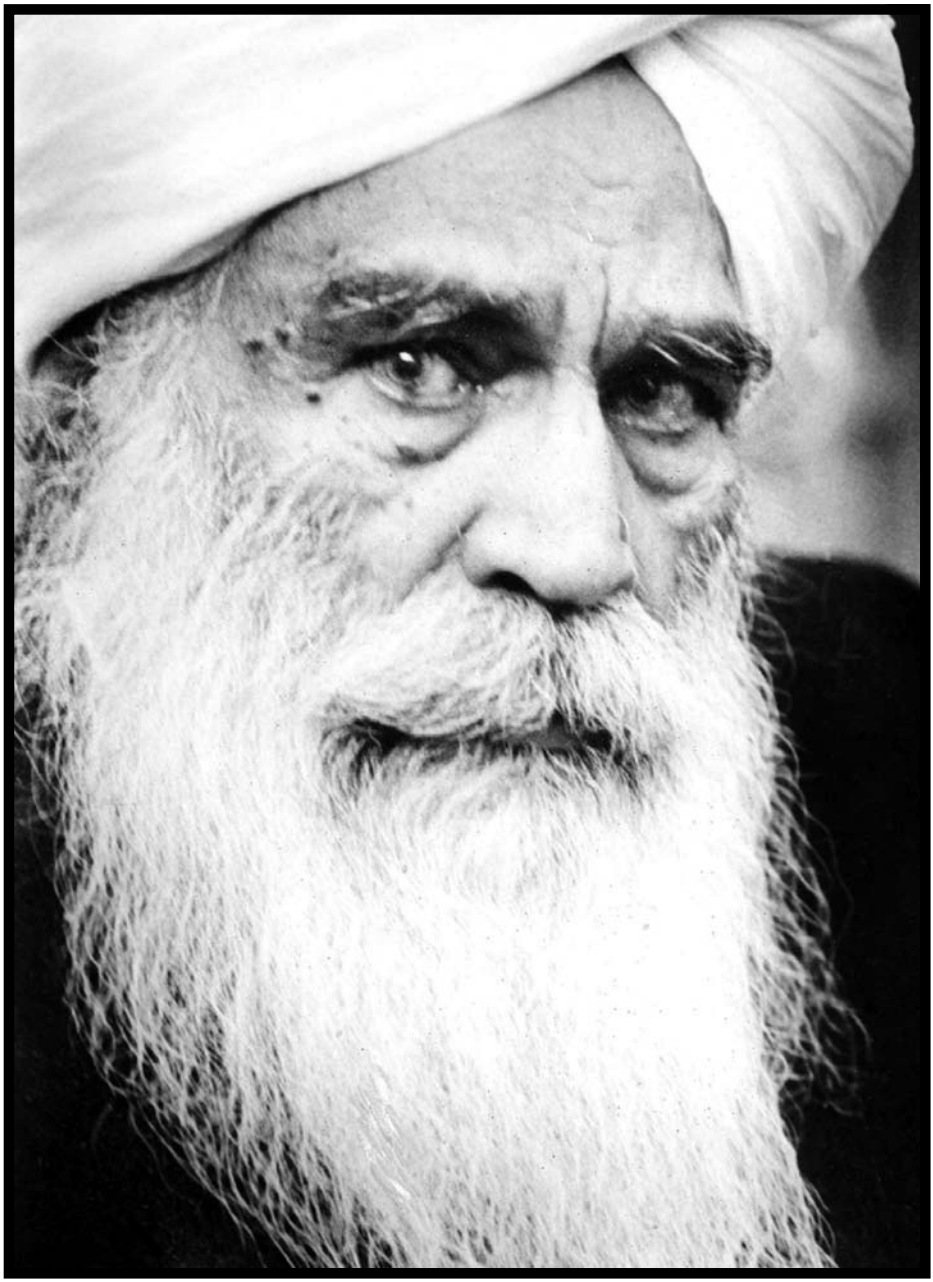

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

आपके जीवन श्वांसों का लुटेरा

सही जीवन जीने के लिए भजन जरूरी है। भजन करने का सही मतलब अंतर में जाना और परमात्मा से जुड़ना है। सच्चे सन्तों का हमेशा यही लक्ष्य रहा है कि वे लोगों को भजन करना सिखाएं। मन अंतर में परमात्मा के साथ संपर्क साधकर परमात्मा की मौजूदगी में मस्त हो जाता है।

श्रद्धालु आत्मा को आकाश से आता हुआ संगीत अखंड कीर्तन लगातार सुनाई देना चाहिए। हमारी आत्मा उस आवाज, उस धुन का हिस्सा है; वह सुनाई देने वाला संगीत इस संसार की गंदगी को साफ करने की ताकत रखता है। इसलिए हमें नियमित तौर पर सतसंग में जाने की ताकीद की जाती है।

सतसंग ही एक ऐसी जगह है जहाँ हम सत्य की संगत में रह सकते हैं। हमारी आत्मा मन और इन्द्रियों से मुक्त नहीं है। आत्मा को अभी तक सत्य के साथ एक होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। हमारी आत्मा को ऐसे गुरु की संगत चाहिए जो सत्य परमात्मा के साथ एक हो गया हो और हमें भी नाम के रंग में रंग दे।

सतगुरु जिनको रंग दिया कभी न होय कुरंग।

सतगुरु जब आत्मा को नाम के रंग में रंग देते हैं तो उन आत्माओं पर दुनिया के रंग असर नहीं करते लेकिन जिन भाग्यहीन लोगों पर नाम का रंग नहीं चढ़ा उन पर संसार के दाग चढ़ते जाते हैं। हमारी सब तकलीफों की वजह यही है कि अभी तक हम नाम के सच्चे रंग में नहीं रंगे गए।

यह रंग कहाँ से आता है? परमात्मा मस्त कर देने वाले प्यार के रंग से लबालब भरा हुआ है। जिसके अंतर में परमात्मा का मस्त कर देने वाला प्यार लबालब बह रहा है उसकी संगत में जाकर हम उस तरह का प्यार प्राप्त कर सकते हैं, उसकी रहमत से हमें भी वह मस्ती मिल जाएगी।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन-रात।

अगर हम इस विषय के बारे में अध्ययन कर रहे हैं तो हमें पता लगता है कि संसार की सारी शिकायतें नाम के संपर्क में न होने के कारण हैं। जब कोई प्रेमी हुजूर से मन के टिकने में अपनी असमर्थता की शिकायत करता तो आप जवाब देते, ''आपका सिमरन अभी लगातार नहीं है।'' जब कोई प्रेमी भजन में न बैठ पाने की शिकायत करता तब भी आपका यही जवाब होता था।

हमारी परेशानी यह है कि हम संसार के रंगों में डूबे हुए हैं अगर हमारे ऊपर से संसार के रंग उतर जाएं तो हम साफ हो जाएंगे और ताजे रंग में रंगने के लिए तैयार हो जाएंगे। गंदे कपड़े को रंगने से पहले उसे साफ करना जरूरी है। मन और इन्द्रियों के घाट से आते हुए हमारा दिल और दिमाग गंदा हो गया है और हम अपने जीवन के कर्मों से गंदे हो गए हैं इसमें हमारे पिछले जन्मों के दाग भी जुड़ गए हैं।

अगर आप पिछले जन्मों को एक तरफ रखकर सिर्फ इसी जन्म के बारे में विचार करें तो भी कितने वर्ष निकल चुके हैं। हो सकता है आप भाग्यशाली हों! आपको किसी सन्त की दया से उसकी संगत में नाम के रंग का कुछ फायदा उठाने का आनन्द मिला हो लेकिन उसमें भी हमें यही कहा जाता हैः

सिमरन करें, सतगुरु की सेवा करें।

हम संसार का सिमरन करते हुए संसार के रंगों में रंगे हुए हैं, हम परमात्मा का सिमरन और ध्यान करके ही साफ हो सकते हैं। पहला कदम सिमरन है। सिमरन बिना रूके लगातार होना चाहिए। परमात्मा के रंग में रंगे जाने के लिए आत्मा की तैयारी से पहले यह सफाई की प्रक्रिया है।

एक जाप, एक ख्याल और एक के लिए तड़पें। तन-मन से एक के गुण गाएं, परमात्मा का नाम प्यार से जपें। अंतर में परमात्मा के लिए निरंतर तड़प के अलावा कुछ भी न हो ऐसा सिमरन करने वाले उसी रंग में रंग जाते हैं।

जब सतगुरु शिष्यों के प्रति आकर्षण महसूस करते हैं तब वे अपना थोड़ा सा भेद प्रकट करते हैं। आत्मा एक चेतन हस्ती है, अमर है, संपूर्ण ज्ञान और आनन्द से भरपूर है। जब मन-इन्द्रियां अपने गंदे रंग से मुक्त हो जाती हैं आत्मा परमात्मा से जुड़ जाती है तब बिना किसी कोशिश के परम आनन्द बिखरने लगता है। जो लोग भजन नहीं करते वे कभी भी दुखों से मुक्त नहीं हो सकतेः

आलस नींद सतावे उनको नित नित भ्रम गहे।
काम क्रोध के धक्के खावे लोभ नदी में डूब मरे।।

आलस्य उन्हें हमेशा तंग करता रहेगा। काम टालने की प्रवृति कब आती है और कब जाती है?

बुरे काम को उठ खलोया, नाम की वेला पै पै सोया।

इंसान इन्द्रियों को संतुष्ट करने के लिए आधी रात को भी उठ जाता है लेकिन भजन करने के लिए कहता है कि अभी नहीं कल देखेंगे? शिष्य की ज्यादातर मौज-मस्ती नियमित संगत की वजह से है, यह उनकी तरफ झुक गया है। इसने बिल्कुल भी भजन

नहीं किया, गहराई में जाकर वह मीठा अमृत नहीं पिया इसलिए यह उस अमृत के प्रति इच्छा महसूस नहीं करता।

आलस्य के साथ काम टालने की आदत बन जाती है। अभी नहीं थोड़ी देर रूको यह काम आज रात को कर लेंगे, नहीं कल सुबह कर लेंगे, आखिर इसका परिणाम दुखद होता है। अगर आप एक घड़ी को टाल देते हैं तो वह घड़ी जिसको आप ज्यादा उपयुक्त समझते हैं वह कभी नहीं आएगी।

आलस्य नींद को प्रेरित करता है अगर आपका अभ्यास फलदायक नहीं तो आपको कैसे पता लगेगा कि अंतर में क्या है? जबकि नामदान के समय गुरु की दया से अंतर में कुछ दिखा फिर भी यह इंसान सोचता है कि यह सब काल्पनिक है। इस तरह से मन हमें छलता है जिसका नतीजा यह है कि आत्मा भोगों में फँस जाती है और अपना ध्यान बिखेर लेती है।

आत्मा अविनाशी और अपरिवर्तनीय है लेकिन यह मन का साथ लेकर इस सृष्टि में आई और तभी से जन्म-मरण के चक्कर में दुख भोग रही है। भ्रमों में कैद, संसार में फैले ध्यान के कारण यह भोगों और क्रोध का शिकार बन जाती है। भोगों के जरिए आत्मा बहुत नीचे गिर जाती है। आत्मा की बैठक बहुत ऊँची जगह- दोनों आँखों की भौंहो के बीच है और भोगों की बैठक हर कोई जानता है कि कहाँ है?

नाम और काम दोनों एक साथ नहीं रह सकते। जहाँ काम है वहाँ नाम नहीं। सूरज और चंद्रमा दोनों अपनी-अपनी जगह रहते हैं। नाम और सदा रहने वाला परमात्मा एक ही है जो हर जीव में है। आत्मा का नाम से मिलाप इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर

दोनों आँखों के पीछे और बीच में होता है, यहाँ आत्मा मौत के समय आती है इसे आत्मा की बैठक कहा जाता है।

अगर आत्मा नाम के रंग में भीगी हुई है तो उस पर ख्वाहिशें कैसे असर कर सकती हैं? अगर ध्यान शरीर में है तो शिष्य भोगों से पीड़ित हो जाता है। आत्मा को स्थिर करने वाली नाम की ताकत के बिना मन के लगातार विरोध के रहते हुए आत्मा संसार में बिखरी रहती है। भोगों और क्रोध का भी यही अंजाम होता है इसके पश्चात ईर्ष्या, आलोचना, चुगली, छोटे-मोटे विवाद ये सब भजन की कमी की वजह से होते हैं।

अगर ईमानदारी से थोड़ा भी भजन किया होता, कुछ नाम की मस्ती का आनन्द उठाया होता तो असली जीवन के अमृत का स्वाद चख लेने के बाद शिष्य हजारों काम छोड़कर उसका आनन्द लेने के लिए भजन में बैठ जाएगा।

जब ओह रस आवे, तब एह न रहावे।

अभ्यास के लिए ज्यादा से ज्यादा समय निकालने के लिए शिष्य अपने जीवन को सुव्यवस्थित करेगा। जब प्रेमियों से पूछा जाता है कि भजन क्यों नहीं करते तो उनके पास बहाना होता है कि इस बहुमूल्य काम के लिए उनके पास कभी समय नहीं होता जबकि संसार के काम करने के लिए हम हमेशा तैयार और तत्पर रहते हैं लेकिन भजन के प्रति वफादार नहीं क्योंकि हमें अभी तक नाम का अंतरी अनुभव नहीं हुआ।

काम, क्रोध के धक्के खावे, लोभ नदी में डूब मरे।

हर दिन लोभ बढ़ता जाता है जिसके पास सौ डॉलर हैं वह हजार डॉलर चाहता है और जब उसे वह मिल जाते हैं तो वह और

चाहता है। हम लोग बिना कुछ किए अपनी तारीफ चाहते हैं अपना जीवन झूठ और धोखाधड़ी में बिताते हैं। सारा जीवन चालाकियों में बीत जाता है अपने ऊपर रत्ती भर भी काबू नहीं रखते। हमारी ऐसी हालत देखकर गुरु कहता है, ''जहाँ हैं वहीं रूक जाएं।''

अपनी हालत देखें! यह सब भजन की कमी की वजह से है और इसका केवल एक ही ईलाज है आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़े। लगातार नियमित अभ्यास से प्राप्त की गई नाम की मस्ती बाहर के भोगों के स्वाद को मिटाना शुरू कर देगी। स्वाभाविक है कि ज्यादा मधुर स्वाद के आगे बाकी सभी स्वाद फीके ही लगेंगे।

गुरु का काम आत्मा को निरंतर धुन के साथ जोड़ना है। परमात्मा हर झलक के साथ हमें मुफ्त में जोड़ता है। कुदरत की इस बेशकीमती दात को प्राप्त करने के बाद हमें रोज अभ्यास करके इसे बढ़ाना चाहिए। जब हम असल में अमृत का आनन्द उठाना शुरू करते हैं तो बाहरी वस्तुएं अपने आप बिना किसी कोशिश के कम होने लगती हैं।

अपने आपको काबू में करने के लिए अपने पूरे जीवन को संपूर्ण नियंत्रण में लाने के लिए बाहरी आकर्षणों से अपने आपको पूरी तरह से कटे रहने के लिए खुद की जाँच-पड़ताल जरूरी है। अपने जीवन के एक छोटे से हिस्से पर नियंत्रण करने से शुरूआत करें अगर आप नाम की अंतरी मस्ती का थोड़ा सा भी आनन्द ले रहे हैं तो आप कामयाब हो जाएंगे। सभी सन्त कहते हैं, ''भजन के बिना कामयाबी नहीं मिलती।''

***

धर्म–कर्म

गुरु नानकदेव जी की बानी 16 पी.एस. राजस्थान आश्रम

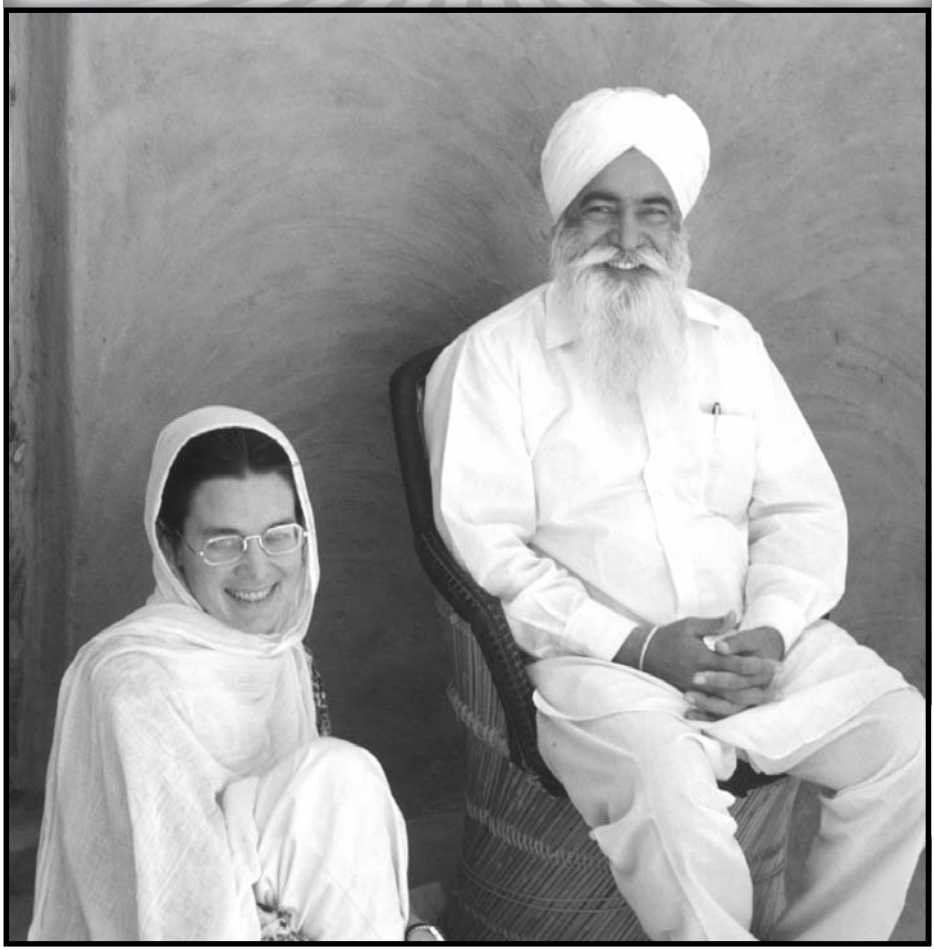

सन्त-महात्मा, वली, फकीर जब भी इस संसार में आते हैं वे अपने सतसंगों में रीति-रिवाज नहीं रखते, किसी कर्मकांड को महानता नहीं देते। वे अपने शिष्यों सतसंगियों को 'शब्द-नाम' और 'सुरत-शब्द' का अभ्यास ही बताते हैं।

सन्त-महात्मा किसी को अपनी खड़ावों और कपड़ों के साथ बाँधने के लिए नहीं आते। वे सबको नाम जपना, अंदर जाना और परमात्मा से मिलना ही सिखाते हैं लेकिन अफसोस से कहना पड़ता है कि महात्माओं के जाने के बाद दुनिया बाहरमुखी हो जाती है और रीति-रिवाजों में ही मुक्ति समझने लगती है। धर्म पुस्तकों की तालीम को समझने की कोशिश नहीं करती बल्कि उनके ग्रन्थों को भगवान का भेजा हुआ कहती है ।

हम जानते हैं कि ग्रन्थ, पुस्तकें देह धारकर ही लिखे जाते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी ने उस समय के प्रचलित रीति-रिवाजों को परमात्मा के आगे पाखंड कहकर बयान किया हैः

कर्म धर्म पाखंड जो दीसे तिस जम जोगाती लूटे।

सच्चाई तो यह है कि आप चाहे जितने भी अच्छे से अच्छे कर्मकांड कर लें! यमों की मार से नहीं बच सकते। बस इतना कहते ही मुसलमानों ने हंगामा खड़ा कर दिया। उस समय के बादशाह जहांगीर को बहका दिया गया कि मौहम्मद साहब की लिखी हुई कुरान तो आकाश से उतरी है, गुरुग्रन्थ साहब में इस्लाम की निन्दा की गई है।

जहांगीर ने गुरुग्रन्थ साहब को छः बार तलब किया। इसका एक-एक अक्षर पढ़ा गया लेकिन इसमें किसी समाज की निन्दा और आलोचना नहीं पाई गई। इसमें सच्चाई बताई गई है कि सतगुरु के बिना 'नाम' नहीं मिलता और नाम के बिना मुक्ति नहीं। सतसंग के बिना हमें अपनी गलतियों का पता नहीं चलता।

बड़े अफसोस से कहना पड़ता है कि उस समय की हुकूमत ने गुरु अर्जुनदेव जी को गर्म तवे पर बिठाया। आपके सिर में गर्म रेत

डाली गई। आपके सगे बड़े भाई ने उस समय की सरकार के पक्ष में होकर आपको ये सारे कष्ट दिलवाए। आपका यही कसूर था कि आपने लोगों को सच्चाई बताई कि इन्सान का जामा अमोलक है। आप सच्चे मुसलमान बनें! सच्चे हिन्दू बनें! मुसलमान उसे कहा गया है जिसका दिल मोम जैसा है, जिसमें सब्र और सन्तोष है; जो परमात्मा के भाणे में रहता है।

जरा सोचकर देखें! अगर गलती से हमारा हाथ किसी गर्म जगह लग जाए, अगर हम गर्म रेत पर नंगा पैर रख दें तो किस तरह तड़प उठते हैं! उस महात्मा के साथ क्या बीती होगी जिसे इस तरह के अमानवीय कष्ट दिए गए।

कृष्ण भगवान की लिखी हुई गीता पढ़ने से पता चलता है कि उन्होंने अपनी तरफ से कोई भी कर्मकांड नहीं चलाया। पवित्र होने पर जोर दिया लेकिन अफसोस से कहना पड़ता है कि उनके जाने के बाद उनके ही अनुयायी स्वांग बनाकर उनके नाम पर पैसे माँगने लग गए।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने ग्रन्थ में राम और सीता की कहानी लिखी है, जिसमें उन्हें बहुत अच्छा इन्सान बताया गया है। सीता बहुत अच्छे धर्म-कर्म वाली औरत हुई है। अफसोस! लोग राम-सीता का स्वांग बनाकर नाचते हैं और पैसे मांगते हैं।

शेख बरम ने जब लोगों को ऐसे स्वांग बनाकर नाचते हुए देखा तो उसने गुरु नानकदेव जी से पूछा, ''ये लोग जो रास कर रहे हैं क्या यह ठीक है?'' गुरु नानकदेव जी शेख बरम को उस सच्ची रास के बारे में बताते हैं कि परमात्मा के घर में रोजाना ही रास हो रही है, जिसे सन्त हमेशा ही देख रहे हैं।

घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कन्ह गोपाल॥

गुरु नानकदेव जी शेख बरम से कहते हैं कि हम तुझे परमात्मा के घर की रास के बारे में बताते हैं। घड़ियाँ चार और पहर आठ हैं। गोपियाँ घड़ियाँ और कृष्ण के साथी ग्वाले पहर हैं।

गहणे पउणु पाणी बैसतरु चंदु सूरजु अवतार॥

पवन-पानी गहने हैं। चाँद-सूरज इसका शृंगार हैं ये दिन-रात रोशनी देकर जीवों की मदद करते हैं। हिन्दू शास्त्रों में जो देवता प्राणों वाली देह धारण करके आए, उसे अवतार कहते हैं। चौबीस अवतार माने जाते हैं। अवतार उसे कहते हैं जो माता के पेट से न जन्मा हो, प्रकट हुआ हो। राम और कृष्ण को अवतार माना जाता है लेकिन उनके माता-पिता का भी जिक्र आता है।

सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल॥

आप कहते हैं कि धरती जीवों के खाने के लिए पदार्थ पैदा करती है। जीव जिन जंजालों में फंसा हुआ है वे बर्तन हैं।

नानक मुसै गिआन विहूणी खाई गइआ जमकालु॥

आप प्यार से कहते हैं कि ज्ञान न होने के कारण, शब्द-नाम प्रगट न होने के कारण आखिर यम इसे खा जाता है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''जो पैदा हुआ है वह नष्ट होगा, सिर्फ परमात्मा ही कायम रहेगा।''

वाइनि चेले नचनि गुर॥ पैर हलाइनि फेरन्हि सिर॥

रास धारिए गुरु गांवों-शहरों में कृष्ण का स्वांग बनाकर नाचते हैं और उनके चेले साज बजाते हैं। जब वे इस तरह की रास रचाते हैं तो बैठे हुए लोग उन्हें देखते हैं लेकिन नाचते हुए जब गुरु

का पैर ठीक नहीं पड़ता तो सब लोग सिर फेरकर कहते हैं कि यह ठीक नहीं, दोबारा करें। सोचकर देखें! कृष्ण त्रिलोकी का मालिक था। आज ये लोग कृष्ण का स्वांग धारण करके पैसे मांग रहे हैं। भाई गुरदास जी कहते हैंः

सिख बैठन घरां विच गुरु चल तनाड़े घर जाई।
चेले साज वजायेन्दे नच्चण गुरु बहु विध भाई॥

हमारा या गुरु नानकदेव जी का प्रायोजन किसी की आलोचना करना नहीं है। गुरु नानकदेव जी ने जो कुछ अपनी आँखों से देखा और जो कुछ आज हो रहा है वही अपनी बानी में बयान किया है।

उडि उडि रावा झाटै पाइ॥ वेखै लोकु हसै घरि जाइ॥

विदेशों में जहाँ डांस होते हैं, वह जगह पक्की होती है लेकिन हिन्दुस्तान में तो रेत होता है। ये लोग छलाँगें मार-मारकर नाचते हैं तो रेत उड़कर लोगों के मुँह और सिर में पड़ती है, देखने वाले लोग अपने घरों में जाकर खूब हँसते हैं।

रोटीआ कारणि पूरहि ताल॥ आपु पछड़हि धरती नालि॥

बच्चे घरों में जाकर अपने माता-पिता को उन नाचने वालों के बारे में बताते हैं तो माता-पिता बच्चों को समझाते हैं कि ये सचमुच के कृष्ण या गोपियाँ नहीं। ये बेचारे तो यह सब रोटियों के लिए कर रहे हैं।

गावनि गोपीआ गावनि कान्ह॥ गावनि सीता राजे राम॥

उनमें से कोई गोपी-कान्हा और कोई सीता-राम बनकर गाते हैं। आप सोचकर देखें! हम उन महापुरुषों का इससे ज्यादा और क्या अनादर कर सकते हैं?

निरभउ निरंकारु सचु नामु॥ जा का कीआ सगल जहानु॥

सिर्फ वह परमात्मा ही भय से रहित है। परमात्मा का 'नाम' ही जपने के काबिल है।

सेवक सेवहि करमि चड़ाउ॥ भिंनी रैणि जिन्हा मनि चाउ॥

जब शिष्य महात्मा के पास आकर कहता है कि मैं दुखी हूँ मुझे मुक्ति का साधन बताकर मुझ पर दया करें। महात्मा उसे कहते हैं कि गृहस्थ में रहते हुए अपनी जिम्मेवारियों को निभाते हुए शब्द-नाम की कमाई करें, सुबह उठकर दो-तीन घंटे का समय लगाएं। जो कीर्तन परमात्मा ने तेरे अंदर जारी किया है, तू उस कीर्तन के साथ जुड़ और अपने आपको उसके हवाले कर दे।

सिखी सिखिआ गुर वीचारि॥ नदरी करमि लघाए पारि॥

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि वही शिष्य है जिसके पास गुरुओं की शिक्षा है। गुरुओं की शिक्षा यही है कि तू भजन-सिमरन कर, नाम जप। जब हम दुनियावी पिता के कहे मुताबिक काम करते हैं तो पिता हम पर खुश हो जाता है और हमें अपनी कमाई हुई दौलत भी दे जाता है।

सन्त हजारों माता-पिता जैसा प्यार लेकर संसार में आते हैं। वे हमसे कुछ नहीं छिपाते। परमात्मा ने उन्हें रुहानियत की जो दौलत दी होती है वे उसे लेकर शिष्य के अंदर बैठ जाते हैं। गुरु-घर में नाम जपने वालों की, सेवा करने वालों की ही कद्र है।

कोलू चरखा चकी चकु॥ थल वारोले बहुतु अनंतु॥

आप शेख बरम से कहते हैं, ''प्यारेया! तूने जो इन रास करने वालों को जमीन पर घूमते हुए देखा है अगर ऐसे घूमने से ही परमात्मा मिलता होता तो तिलों में से तेल निकालने वाला कोल्हू जो सारा दिन ही घूमता रहता है उसे मुक्त हो जाना चाहिए था। इसी तरह चाक और कुम्हार की बाजू भी सारा दिन घूमती रहती है उसे भी मुक्त हो जाना चाहिए था।''

लाटू माधाणिआ अनगाह॥ पंखी भउदीआ लैनि न साह॥

बच्चे लट्टुओं से खेलते हैं। मधानियों से दूध बिलौते हैं मधानियां भी बहुत घूमती हैं और अनल पक्षी सारा दिन आकाश में घूमता है उसे भी मुक्त हो जाना चाहिए था।

सूऐ चाड़ि भवाईअहि जंत॥ नानक भउदिआ गणत न अंत॥

बच्चों के झूलने वाला हिण्डोला बच्चों को बिठाकर कितने ही चक्कर लगाता है अगर चक्कर लगाने से मुक्ति होती हो तो बच्चों और उस हिण्डोले को भी मुक्त हो जाना चाहिए था।

बंधन बंधि भवाए सोइ॥ पइऐ किरति नचै सभु कोइ॥
नचि नचि हसहि चलहि से रोइ॥ उडि न जाही सिध न होहि॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''ये लोग रोटी और धन के लिए नाचते हैं। इन्होंने पिछले जन्मों में बुरे कर्म किए हैं। अब फिर ये बुरे कर्म कर रहे हैं। न ये सिद्ध पुरुष बनेंगे न ही मुक्त होंगे।''

नचणु कुदणु मनि का चाउ॥
नानक जिन्ह मनि भउ तिन्हा मनि भाउ॥

नाच-कूदकर हम मन को ही खुराक दे रहे हैं। मालिक के प्यारों को परमात्मा का डर भी है और परमात्मा से प्यार भी है। मालिक के प्यारे लोक-दिखावा नहीं करते।

नाउ तेरा निरंकारु है नाई लइऐ नरकि न जाईऐ॥

अब गुरु नानकदेव जी महाराज परमात्मा की तारीफ करते हैं कि हे परमात्मा! तू ही जीवों पर दया कर सकता है। सन्तमत में 'नाम' को ही मुख्य माना गया है। यह नाम लिखने, पढ़ने और बोलने में नहीं आता। तुलसी साहब डंके की चोट पर कहते हैं:

सोना काई न गले, लोहा घुन न खाए।
बुरा भला गुरु भक्त, कदे नर्क न जाए॥

नाम जपने वाला कभी भी नरक में नहीं जाएगा।

जिउ पिंडु सभु तिस दा दे खाजै आखि गवाईऐ॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि परमात्मा ने आपको यह शरीर और इस शरीर में रहने वाली आत्मा दी है। उसी परमात्मा ने आपको और बहुत सी दातें दी हैं जिसके लिए हमें उसका आभारी और शुक्रगुजार होना चाहिए।

बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आप दाएँ हाथ से दान दें तो बाएँ हाथ को भी पता नहीं चलना चाहिए।''

गुरु नानकदेव जी तो यह भी कहते हैं, ''अगर आप अच्छे कर्म करते हैं तो यह भी सोचें कि आपने बुरे कर्म भी किए हैं। अच्छे कर्म करने पर भी आप अपने आपको नीच और पापी समझें। यह परमात्मा की दया ही है कि आपको कुछ अच्छे काम करने का मौका भी मिला है।''

बाबा सावन सिंह जी आमतौर पर एक कंजूस व्यापारी की कहानी सुनाया करते थे जो कभी किसी को कुछ नहीं देता था। उसकी पत्नी बहुत अच्छी थी। वह पंडितों, गरीबों और जरूरतमंद लोगों को कुछ देना चाहती थी लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकती थी क्योंकि उसका पति बहुत कंजूस था।

एक दिन वह कंजूस व्यापारी अपनी पत्नी के कहने पर गंगा नदी के किनारे एक ऐसे पंडित को ढूँढने गया जो ज्यादा दान-दक्षिणा न मांगे। उसे चार पंडित मिले जो कर्मकांड में लगे हुए थे। व्यापारी ने उनसे पूछा, ''पंडित जी! आप कितना खाना खा सकते हैं?'' उन पंडितों ने कहा कि वे दस किलो घी, पाँच किलो मिठाई, दूध इत्यादि खा लेंगे क्योंकि वे इतना सब खाने के आदी हैं। व्यापारी ने सोचा, ये पंडित तो बहुत खाते हैं इसलिए वह वहाँ से चल पड़ा।

आगे चलकर उसने एक ऐसा पंडित ढूँढ लिया जो बहुत कमजोर था। व्यापारी ने सोचा यह पंडित मेरे लिए ठीक रहेगा क्योंकि यह ज्यादा नहीं खा सकेगा मैं इसे ले जाता हूँ। मेरी पत्नी खुश हो जाएगी। व्यापारी ने उससे पूछा, ''पंडित जी! आप कितना खा सकते हैं?'' पंडित उसके दिल की बात समझ गया कि यह कंजूस आदमी है। पंडित ने कहा, ''मैं बहुत कमजोर हूँ, हमेशा बीमार रहता हूँ ज्यादा नहीं खा सकता, थोड़ा सा रूखा-सूखा खा लूँगा।'' व्यापारी ने घर आकर अपनी पत्नी से कहा, ''मैं तुम्हारे लिए एक पंडित ढूँढ लाया हूँ यह जो माँगे इसे दे देना।'' यह जानकर व्यापारी की पत्नी बहुत खुश हुई।

व्यापारी की पत्नी ने पंडित से पूछा कि आपको क्या चाहिए? पंडित ने कहा कि दस किलो दूध, पांच किलो घी, पन्द्रह किलो मिठाई, कुछ कपड़े, कुछ सामग्री और एक हजार रुपये दाँत घिसाई

दें। ये सब लेकर पंडित अपने घर चला गया। पंडित डरा हुआ था कि उसने एक कंजूस व्यापारी को धोखा दिया है। उस पंडित ने सब चीजें अपनी पत्नी को देकर कहा, तुम ये सब चीजें संभालकर रख लो कहीं वह कंजूस इन्हें वापिस लेने न आ जाए।

पंडित की पत्नी बहुत चालाक थी। उसने कहा, ''तुम चिन्ता मत करो। बिस्तर पर लेटकर कराहो कि जैसे तुम बीमार हो।'' जब कंजूस व्यापारी को यह सब पता चला तो वह सीधा पंडित के घर जा पहुँचा। वहाँ जाकर उसने देखा कि पंडित इस तरह कराह रहा है जैसे वह मरने वाला हो। उसकी पत्नी भी जोर-जोर से रोकर कहने लगी, ''पता नहीं पंडित जी आज किसके घर से खाना खाकर आए हैं। उस खाने में जहर मिला होगा, जो यह मरने वाले हैं। अब क्या होगा? मेरे पास तो दवाई के लिए भी पैसे नहीं हैं।''

जब उस व्यापारी ने यह सब सुना तो वह डर गया कि हो सकता है कि पुलिस इस मामले की जांच करे! क्योंकि पंडित खाना तो उसके घर से ही खाकर आया था। इस डर की वजह से व्यापारी ने पंडित की पत्नी को और रुपये देकर कहा कि पंडित को डॉक्टर से दवाई दिलवाओ। कंजूसों की यही हालत है।

जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंनहु नीचु सदाईऐ॥

शेख बरम ने गुरु नानकदेव जी से कहा, ''मेरे पास रूहानी ताकत है, मुझे यमराज भी नहीं छू सकता।'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''शेख बरम! अगर तुम बलवान हो तो बुढ़ापे को रोककर दिखाओ अगर तुम सदा ही जवान रहकर दिखाओ तो मैं तुम्हारी ताकत को मान लूँगा।''

जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ॥
को रहै न भरीऐ पाईऐ॥

जब हमारे सांस पूरे हो जाते हैं तो हम इस संसार में नहीं रह सकते। आजकल लोग कई धर्मों से जुड़े हुए हैं। कई तरह के भाषण देते हैं, मुक्ति की बातें करते हैं लेकिन वे यह नहीं जानते कि मुक्ति क्या है? हम पिछले किए हुए कर्म इस जन्म में भुगत रहे हैं और अब जो कर्म करेंगे उन्हें आगे भुगतेंगे अगर हम अच्छे कर्म करेंगे तो आने-जाने के चक्कर से मुक्त हो जाएंगे।

आज कलयुग में **धर्म-कर्म** पूरे जोर पर हैं। अब लोगों ने धर्म गुरुओं-कबीर साहब, गुरु नानकदेव जी पर फिल्में बना दी हैं। लोग अपने परिवार के साथ ये फिल्में देखने जाते हैं। मैंने सुना है, ऐसी धार्मिक फिल्में बनाने वाले गर्व से कहते हैं कि हम धार्मिक फिल्मों से ज्यादा कमा लेते हैं। ऐसी धार्मिक फिल्में देखने वाले सोचते हैं कि उनके पाप धुल जाएंगे और उन्हें कुछ ज्ञान भी मिलेगा लेकिन उन्हें फिल्में देखने की लत पड़ जाती है।

आप जानते हैं कि सन्तों की बानियाँ हमारे सुधार के लिए होती हैं लेकिन आज के आदमी-औरतें वासना में पड़कर अपनी जिंदगी बर्बाद कर रहे हैं। सन्त किसी की निन्दा नहीं करते। सन्त कहते हैं कि हमें अपने जीवन को पवित्र रखना चाहिए। सतसंग में हाजरी लगाकर सन्तों के बताए हुए रास्ते पर चलकर अपने जीवन को सुधारना चाहिए।

झूठी दुनियां च फसया दिल मेरा

झूठी दुनियां च फसया, दिल मेरा, कोई आ के बंधन तोड़ गया,
लख वारी ओह, जी सदके, जेहड़ा सुरत शब्द नूं जोड़ गया ×2

1. भटके दुनियां विच रूह मेरी ×2 मिलया ना कोई दर्दी,
फसी फसाई दुनियां दे विच, दुनियां है बेदर्दी,
भुल्ल के रस्ता, औजड़ पै गई ×2 रस्ते वल मुँह मोड़ गया,
लख वारी ओह .....

2. मैं मूर्ख पापण हत्यारी, ऐबां दे विच अड़ गई,
याद प्रभु दी भुल्ल गई मैं, हेठ पापां दे दड़ गई,
तरस मेरे ते, कीता आ के ×2 काल दे संगल तोड़ गया,
लख वारी ओह.....

3. मैं अनजान ना कुछ वी जाणां ×2 मैं धक्के खांदी फिरदी,
मिल जाऐ कृपाल दयालु, तांघ दिलां विच चिरदी,
रूह 'अजायब' दी, घर तों भुल्ल गई ×2 फड़के घर नूं मोड़ गया,
लख वारी ओह.....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन–अभ्यास

हाँ भई! अगर खुशकिस्मती से सन्त–सतगुरु मिल जाते हैं तो हमें सच्चे दिल से उनके साथ प्यार करना चाहिए। सन्त–सतगुरु हमें जो रास्ता बताते हैं कि दुनिया की ख्वाहिशों को एक तरफ रखकर ईमानदारी के साथ सच्चे दिल से नाम की कमाई करनी चाहिए। सन्त–सतगुरु अंदर ही हमारी सुरत को शब्द–नाम के साथ जोड़ देते हैं।

हमें दुनिया की मान–बड़ाई का प्यार कम करके अंदर जाना चाहिए। अगर हम दुनिया की मान–बड़ाई को एक तरफ रखकर, दुनिया के सामान का मोह छोड़कर अंदर जाएंगे तो हमें जिस दौलत की खोज है वह हमें अंदर से ही मिल जाएगी। अंदर जाकर पहले हमें ज्योत के दर्शन होते हैं उसके बीचों–बीच शब्द–नाम की, उस नाद की आवाज आ रही है।

जब हम रोजाना अभ्यास करते हैं तो हमें महारत हासिल हो जाती है। आप कोई भी अभ्यास करें पहले कठिनाई महसूस होती है क्योंकि नया काम शुरू किया होता है। हमें रोजाना अभ्यास करने से सफलता मिलती है, फिर हमें कोई रोक नहीं सकता।

पहले–पहले हमारे पैर, गिट्टे, कलाईयां सुन्न होती हैं बाकी का शरीर सुन्न हो जाता है। जब हम आँखों के पीछे आ जाते हैं इन छह चक्रों को तय कर लेते हैं फिर हमारे अंदर नूर और प्रकाश पैदा हो जाता है। अंदर गुरु के साथ मिलाप होने की वजह से दुनिया के सामान से प्यार अपने आप ही निकल जाता है।

अगर आप भिखारी को कोई ऊँची चीज दिखाए बिना उससे कौड़ियां छीनें तो वह मरने–मारने को तैयार हो जाएगा क्योंकि वह उन

कौड़ियों के साथ बंधा हुआ है। अगर आप भिखारी के हाथ में डॉलर या सौ रूपये का नोट पकड़ा दें तो उसे कहने की जरूरत नहीं उसकी मुट्ठी अपने आप ही ढ़ीली हो जाएगी। इसी तरह अगर सन्त–सतगुरु हमें पहले ही दिन यह बात कहें कि आप इन चीजों को छोड़ दें तो हम घबरा जाएंगे, छोड़ नहीं सकेंगे।

सन्त–सतगुरु हमारे आगे वह आदर्श रखते हैं जिसे पाकर हम अपने आप ही इस दुनिया के सामान में से ख्याल निकाल लेते हैं। सन्त–सतगुरु नाम की महिमा बयान करते हैं, नाम के फायदे बताते हैं, नाम को प्राप्त करने का साधन और तरीका बताते हैं। जब हम उस ऊँचे और सच्चे नाम को प्रकट कर लेते हैं फिर दुनिया के पदार्थों की चाहना नहीं रहती।

हमारे हिन्दुस्तान का रिवाज है कि लड़कियां बचपन से ही गुड्डी–पटोलों के साथ खेलती हैं। लड़कियां गुड्डी–पटोलों के साथ तब तक ही खेलती हैं जब तक उनकी शादी नहीं हो जाती। जब शादी हो जाती है तो कोई गुड्डी–पटोलों को संभालकर नहीं रखता। शादी के बाद लड़की का प्यार पति के चरणों में और अपने घर में लग जाता है। इसी तरह हम दुनिया के कर्मकांड, रीति–रिवाजों में तब तक ही फँसे हैं, जब तक हमारी शादी उस परमात्मा के साथ नहीं हो जाती।

मैंने कल सतसंग में बताया था कि जब तक हमारी आत्मा शब्द के साथ नहीं जुड़ती, सन्तों से नाम प्राप्त नहीं करती उस समय तक यह कुँवारी है। सन्त–सतगुरु जिस समय हमें नाम देते हैं उस समय शब्द–रूप होकर इस आत्मा के साथ शादी कर लेते हैं।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि जब एक बार सतगुरु शब्द के साथ शादी हो जाती है फिर यह आत्मा उसकी बीवी बन जाती है। अब

उसकी मर्जी है वह जब चाहे लेकर जा सकता है। अच्छा पति अपनी पत्नी के लिए हर किस्म की कुर्बानी करने के लिए तैयार होता है उसे पता है कि यह मेरा फर्ज है इसकी इज्जत मेरे हाथ में है। यह तो एक दुनियावी पति की बात है। गुरु नानकदेव जी ने सच्चे पति कुलमालिक का इस तरह जिक्र किया है:

हर की नार सदा सुहागन रांड न मैले वेसे।

दुनिया की शादियां टूट जाती हैं। औरत विधवा हो जाती है या मर्द विधुर हो जाता है। एक न एक दिन एक का विछोड़ा जरूर पड़ जाएगा लेकिन आत्मा और परमात्मा की शादी में आत्मा कभी विधवा नहीं होती इसे सदा का सुहाग मिल जाता है।

हमारा फर्ज बनता है कि हम अपने ख्याल को बाहर से हटाकर मन को शान्त करके तीसरे तिल पर एकाग्र करें, हम गुरु का प्यार लेकर अंदर जाएंगे तो हमें जिस दौलत की खोज है वह दौलत हमें अंदर ही मिल जाएगी, रोज–रोज संघर्ष करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

गुरुमुख आए जाए निसंग।

आप सब लोग बाहर से ख्याल हटाकर सिमरन करें, अपने ख्याल को बाहर न भटकने दें। मैं बताया करता हूँ कि भटका हुआ मन तबाही मचा देता है। शान्त मन परमात्मा को प्राप्त कर लेता है। शान्त मन से सिमरन करें और जब आवाज दी जाए तब ही यहाँ से उठना है।

29 अगस्त 1985

***

धन्य अजायब

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से दिल्ली में 18, 19 व 20 मई 2018 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई–बहनों के चरणों में प्रार्थना है कि सतसंग में पहुँचकर सन्तों के वचनों से लाभ उठाएं।

कम्युनिटी हाल,

भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार (नज़दीक पीरागढ़ी चौक)

नई दिल्ली – 110 087

98 10 21 21 38 ■ 98 10 79 45 97 ■ 98 18 20 19 99

अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम 6, 7 व 8 जुलाई 2018 का है